

Gujarat -2007

It has already five years passed since Gujarat Genocide-2002. Violence affected Muslims and directly or indirectly affected many Non-Muslim working class people are living in constant fear, insecurity and loss of faith for each other.

We have selected three representative real life experiences and presenting them in Forum Theatre –a theatre device started by Latin American Cultural Activist –Augusto Boal.

Among these stories, first is about a Dalit youth who had been used by saffron forces and lost his life; during 2002 Carnage. How his family members suffer till today –after five years of genocide?

Another true experience is of Rehana. She is a representative of hundreds of Muslim Women, who have been raped – gang raped and killed. But Rehana is alive and has gathered great courage to file a case against the tourcherers; but is she able to get justice?

Last but not the least, Salim bhai Rickshaw-wala is one of the thousands of working class Muslims who are living in Juhapura Ahmedabad. The biggest Ghetto of Asia. Is he safe enough to earn his bread in this city of fear?

But it is not enough to sympathise with them; we must intervene to change the situation. Samvedan has opened up the possibilities to become an actor -out of just a spectator- for you in this Forum theatre.

This play was prepared during a workshop on the 'Theatre of the Oppressed' by Sanjoy Ganguly, Jan Sanskriti Manch – Kolkatta.

.....

Programme co-ordinator: *Hiren Gandhi*

Script Writer : (1) Saroop Dhruv
(2) SamvedanTeam.

Director : (1) Hiren Gandhi
(2) Sanjoy Ganguly.

Music : Jayesh.

Artists: Jayesh, Mahendra, Rehana,
Shirin,Laxmi,Bipin,
Mahesh, Bhupat, Piyush.

Production Support:

Action Aid.

S.X.S.S.S.

B.S.C.

INSAF.



A-9/4, Sahajanand Tower,
Beside Railway Overbridge,
Jivraj Park,
AHMEDABAD. 380 051
GUJARAT.

Phohe: 079-2681 5484-- 6541 3032
email: hiren_darshan@yahoo.com
festival@eth.net

गुजरात –2007

गुजरात हत्याकांड-2002 को पाँच साल हो चुके हैं। उस हिंसाकांड के सीधे असरग्रस्त मुसलमान और कहीं न कहीं, किसी न किसी तरह से प्रभावित होनेवाले, गुजरात के आम-मेहनतकश लोगों की हालत आज भी कैसी है... इस सवाल का जवाब ढूँढ़ेंगे हम 2002 के हत्याकांड की तीन सत्य-घटनाओं पर आधारित नाट्य प्रयोग में।

पहली कहानी है शंकर की; जो उस दलित-समुदाय का प्रतिनिधि है जिसको उस हत्याकांड का हथियार बनाया गया था। उसके आक्रोश का अंत आया था मौत में! ऐसे 'शहीद' कहलाये जानेवाले दलितों के परिवार की हालत आज क्या है, कैसी है यह देख कर हम सोचने पर मजबूर हो जायेंगे कि 'कौमी' कही जानेवाली हिंसक आग कहाँ तक पहुँच सकती है?! कितनों को 'स्वाहा' करती है?!

दूसरी कहानी अहमदाबाद के ऑटोरिक्षा ड्राइवर सलीमभाई की है। वह भी अपने समाज का प्रतिनिधि है जो शहरों की सड़क पर रिक्शा चला कर जिन्दगी बसर करते आये हैं। पर क्या 2002 के बाद शहर के मुस्लिम अपना काम चैन से या सलामती से कर पाते हैं? शहर के कितने झहरिले टुकड़े हो चुके हैं जिन में साँस तक लेना मुश्किल हो गया है?!

तीसरी कहानी है रेहाना की। हम जानते हैं कि 2002 में मुसलमान औरतों ने बहुत ही घिनौने अत्याचार झेले हैं। सैंकड़ों तो मर चुकीं पर जो बच गई हैं उनके हालात क्या हैं? और तो और, उन्हें अपने समाज की पितृसत्ता और असुरक्षितता का भी सामना करना पड़ रहा है! सब से अब्बल सवाल यह है कि ऐसी मजलूम महिलाएँ इन्साफ़ पायेगी क्या?!

संवेदन कल्चरल प्रोग्राम' के साथी आप के सामने इन कहानियों को रखेंगे –खुले मंच पर। इस 'खुला मंच' प्रयोग का मतलब यह है कि आप इस नाटक के केवल दर्शक ही नहीं हैं –हालात को बदलनेवाले कर्ता-एक्टर भी बन सकते हैं। हो सकता है, आज आप मंच पर हालात बदलने को आगे आये हैं, तो कल जाकर समाज में भी सबके सामने जाकर ऐसी स्थिति को बदलने का साहस कर सकते हैं।

ऐसा क्यों?

पितृसत्ता के साथ हिंसा का रिश्ता उस की शुरूआत से ही चला आया है। जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू! सामाजिक, आर्थिक और राजकीय व्यवस्था चाहे जो भी हो, जैसी भी हो –पितृसत्ता उस में रची-बसी होती है। हरेक समाज के कमजोर रखे गये समुदाय इसके शिकार होते रहे हैं; उनमें से औरत तो समझो, सब से नज़दीकी निशाना!

औरतों के ऊपर होनेवाले सूक्ष्म मानसिक अत्याचार से ले कर, क्रूर और घिनौने शारिरीक हमले इस पितृसत्ता के ही कारणमैं हैं। नफरत, अपमान, सत्तापरस्ती, लालच, हिंसा और युद्धखोरी, जैसे पितृसत्ता के अभिन्न लक्षण हैं।

इस नाटक में हमने पितृसत्ता की सियाही और कलम से लिखे गये इतिहास से लेकर वर्तमान की प्रसांगिकता को उजागर किया है। औरतों के हालात का बयान और उन बयानों को बदलने की कोशिश रखी गयी है। इस बदलाव का पहला कदम है –सवाल करना। सुफ़ियानी सभ्यताएं और महानतम कही जानेवाली संस्कृति को ललकारना सवाल करना और जवाब की खोज जारी रखना।

इस नाटक के किरदारों के साथ साथ दर्शक भी और आज का समाज भी ज़रूर सवाल उठायेगा: **ऐसा क्यों?**

Aisa Kyon? Why this?

The co-existence between patriarchy and violence is age old; as of they are two sides of a coin! Whatever the socio-political and economical system it would be, but patriarchy is intigral. Among any age and system the weaker sections are always victimized by it and women are the softest target among them.

From trivial looking or invisible violence to the gang-rapes and cruel slaughtering of women are conspiracies of patriarchy. Hatred, Insult, Hegemony, Greed, Violence and Warmonging are inseparable characteristics of patriarchy.

In this play we have tried to explore the relationship between violence and patriarchy in their historical perspective. We have depicted the situation and vulnerability of women through the past and have given hints to change the attitude. The first step towards the change is to challenge the so-called cultural heritage and repressive civilizations. To raise the voice against and keep on searching for the answers.

With the characters of this play, you, the spectators and present society will be also start asking Aisa Kyon? –Why this? And you will see the difference.

.....